फ़रियाद

प्रकाशक की ओर से

इस पुस्तक में परम पुरुष पूरण धनी शिवदयाल सिंह जी महाराज के 23 शब्द हैं जो फरियाद और पुकार से संबंधित हैं। गुरु भक्तों को अपने सतगुरु से ऐसी प्रार्थना, फरियाद एवं पुकार करनी चाहिए। इसलिए जयगुरुदेव आध्यात्मिक साहित्य संस्थान द्वारा जीवों के हित सार वचन छंद बंद ग्रंथ से प्रमुख 23 वचनों को इस पुस्तक में शामिल किया गया है। जीवों के अंदर विरह और प्रेम पैदा हो, सतगुरु से दया और मेहर की भीख मांगे, सतगुरु के दर्शन के लिए तड़पें आदि के लिए शब्दों में उकेरे गए ये हीरे मोती पुनः प्रस्तुत किए जाते हैं। इस पुस्तक को छापने का आधार व्यापार नहीं है। जयगुरुदेव

फ़र्याद और पुकार करना सतगुरु से और माँगना मेहर और दया का वास्ते चढ़ने सुरत के और प्राप्ति दर्शन शब्द स्वरूप सतगुरु की

।। पहला शब्द ।।

अब मन आतुर दरस पुकारे ।
कल नहिं पकड़े धीर न धारे ।।
दम दम छिन छिन दर्द दिवानी ।
सोउँ न जागूँ अन्न न पानी ।।
बेकल तड़पूँ पिया तुम कारन ।
डस डस खावत चिंता नागिन ।।
कौन उपाय करूँ अब सजनी ।
भौजल से अब काहे को तरनी ।।
याहि सोच में दिन दिन जलती ।
कोइनसम्हारेआलीपलपलगलती।।

पिया तो बसें मेरे लोक चतुर में ।
मैं तो पड़ी आय मृत्यु नगर में ।।
बिन मिलाप प्रीतम दुख भारी ।
राह चलूँ नहिं जात चला री ।।
घाट बाट जहँ अति अँधियारी ।
कोई न सुने मेरी बहुत पुकारी ।।
जतन न सूझे हिम्मत हारी ।
अपने पिया की मैं ना हुई प्यारी ।।
जो पिया चाहें तो दम में बुलावें ।
शब्द डोर दे अभी चढ़ावें ।।
भाग हीन मैं धुन नहिं पकड़ी ।
काम क्रोध माया रही जकड़ी ।।
सुरत शब्द मारग जो पाया ।
सो भी मुझ से गया न कमाया ।।
मैं तो सब विधि हीन अधीनी ।

मन नहिं निर्मल सुरत मलीनी ।।
तुम समरथ स्वामी अति परबीना ।
मैं तड़पूँ जैसे जल बिन मीना ।।
काज करो मेरा आज सम्हारी।
तुम्हरी सरन स्वामी मैं बलिहारी ।।
हार पड़ी अब तुम्हरे द्वारे ।
तुम बिन अब मोहिं कौन निहारे ।।
तब स्वामी बोले अस बानी ।
मौज निहारो रहो चुप ठानी ।।
धीरज धरो करो विश्वासा ।
अब करूँ पूरन तुम्हरी आसा ।।
सुनत बचन अब सीतल भई ।
चरन सरन स्वामी निश्चल गही ।।

।। दूसरा शब्द ।।

अब मैं कौन कुमति उरझानी।
देश पराया भई हूँ बिगानी ।।
अब की बार मोहिं लेव सुधारी ।
मैं चरनन पर निस दिन वारी ।।
रहुँ पछताय झुरूँ मन अपने ।
कैसे लगूँ मैं सँग पिया अपने ।।
मैं धरती पिया बसें अकासा ।
बिन पाये पिया रहूँ उदासा ।।
हे सतगुरु सुनो मेरी टेरा ।
काल करम अब मारोघेरा ।।
दीन दुखी होय करत पुकारी ।
सुन स्वामी यह बिनती हमारी ।।

तुम दयाल सब को देओ दाना ।
मैं ही अभागिन भइ दुख खाना ।।
क्या कहूँ अब मैं अपनी पीर की ।
जस कोइ छेदत भाल तीर की ।।
तब स्वामी ने दियो दिलासा ।
प्रेम पंख ले उड़ो अकासा ।।
दया हुई अब मिली पिया से ।
हरी पीर दुख दूर जिया से ।।

।। तीसरा शब्द ।।

करत हूँ पुकार, आज सुनिये गुहार, मैं दीन हूँ अधीन, तुम दाता दयार हो।।

अब करिये सम्हार, मेरी नाव है मँझधार,मैं दुखिया अति भार, तुम खेवट अगार हो ।।

दूत और दुष्ट मोहिं, घेर लिया वार, दुख देत हैं अपार, भय दिखावत जम-द्वार, तुम रक्षक हुशियार हो ।।

लेना अब खबर मोर, मैं तो हूँ सरन तोर,काल किया बहुत जोर,

धूम धाम करत शोर, तुम सूरन प्रधान हो ।।

मेरी बुद्धि हैं मलीन, मन सुरत हैं अलीन, बल पौरुष सब छीन, तुम सतगुरु प्रबीन हो ।।

मोहिं दीजे इक दान, मैं माँगत हूँ निदान, सुर्त शब्द का निशान, तुम समरथ सुजान हो ।।

विरह नाहिं, प्रेम नाहिं, भक्ति भाव चाव नाहिं, सरधा परतीत नाहिं, काम क्रोध लोभ माहिं, कैसे करोगे निर्वाह हो।।

रोग सोग नित सतायँ, भजन

सुमिरन बनत नाहिं, भोग बास घटत नाहिं, चिंता डर अधिक दाहिं, और कोइ सुनत नाहिं, तुम ही मेरे बैंद हो ।।

संतन बिन कोइ नाहि, सतगुरु बिन ठीक नाहिं, करम भरम नीक नाहिं, शब्द बिना सीख नाहिं, यही भीख दीजिये ।।

सुरत को चढ़ाओ आज, शब्द का दिखाओ साज, सहसकँवल जाय भाज, देखे व्हाँ का समाज, मन को तब होय लाज, यही काज कीजिये ।।

बंक परे त्रिकुट घाट, खुले फिर सुन्न बाट, महासुन्न खोल पाट, भँवरगुफा बाँध ठाट, सत्त शब्द पाय चाट, सतपुर पहुँचाइये।।

जहँ से परे अलख देख, लोक एक अगम पेख, राधास्वामी पद अलेख, पंडित न जाने भेख, काजी न मुल्ला शेख, संत बिन न जाइये ।।

एक कहूँ सीख मान, मन की तू छोड़ ठान, गुरु की गति अगम जान, शब्द भेद ले पहिचान, तेरी बुद्धि है अजान, काम क्रोध

त्यागिये ।।

सतसँग की क़दर जान, नर शरीर दुर्लभ मान, नाम रस करो पान, गुरु स्वरूप धरो ध्यान, इंद्री मन कसो आन, पर्ख पर्ख चालिये।।

मित्र तेरा कोइ नाहिं, कुल कुटुंब लूट खाहिं, जोबन धन साथ नाहिं, जक्त भर्म फाँस माहिं, काल कर्म खोस खाहिं, खान चार जाइये ।।

जन्म जन्म नर्क बास, जम दिखावे अधिक त्रास, तड़पे तू स्वाँस स्वाँस, पुजवे न कहीं आस, पावे न सुख निवास, कष्ट बहु भोगाइये ।।

जक्त भोग छोड़ चाह, सब से तू हो अचाह, संतन को खोज जाय, सतगुरु की सरन आय, बचन उनके मन समाय, बंद से छुड़ाइये ।।

गुरु का तू बचन पाल, मन की मति तुर्त टाल, बुद्धि के साँचे में ढाल, मनमुख का संग जाल, गुरुमुख की यही चाल, काल हाल जारिये ।।

सूरत नैंना सम्हाल, तिल अकाश फाड़ डाल, निरखो जोती जमाल, द्वारे धस बंकनाल, अनहद पर धरो ख़्याल, गगन में चढ़ाइये।।

सुन्न शिखर चन्द्र देख, दसम द्वार सेत पेख, सरवर में मुक्ति लेख, किंगरी धुन सुन बिसेख, कर्म की मिटाओ रेख, हंस रूप धारिये ।।

महासुन्न अंध घोर, घाट अगम सुगम तोड़, सूरत जहँ कीन पोढ़, सतगुरु सँग चली दौड़, भँवरगुफा सुना शोर, सोहँग में समाइये ।।

आगे की गली लीन्ह, धुन अनन्त शब्द चीन्ह, हंस मिले अति प्रबीन, प्रेम भाव बहुत कीन्ह, सत्तलोक द्वार लीन्ह, बीन धुन बजाइये ।।

वहाँ से फिर चली पार, अलख लोक जा निहार, अलख पुरुष धुन सम्हार, देखा अचरज उजार, किया जाय धुन अधार, अलख दर्श पाइये।।

अगम लोक खबर पाय, ऊपर को चढ़ी धाय, अगम पुरुष दर्श पाय, तेज पुँज अजब जाय, अमी सिंध पहुँची आय, अगम रूप धारिये ।।

यहाँ से भी चली सुर्त, किया जाय वहाँ निर्त, जस समुद्र नदी रलत, चरनन पर सीस धरत, राधास्वामी संग मिलत, निज घर अपना

पाइये।।

कहूँ कहा बहुत कही, यही बात हैं सही, जन्म जन्म भूल रही, चरन धूर धार लई, करम भरम सभी बही, राधास्वामी गाइये।।

लाओ अब प्रेम प्रीत, सतसंग में धरो चीत, पाओ फिर सत्त रीत, गाओ यह अगम गीत, बाजी यह लेव जीत, जग में कोइ नाहिं मीत, मेरी तू कर प्रतीत, दिया सब बुझाइये ।।

।। चौथा शब्द ।।

गुरु गहो आज मेरी बहियाँ ।
मैं बसूँ तुम्हारी छइयाँ ।।
कलमल सब मेरे दहियाँ ।
मैं छोड़ी मन परछइयाँ ।।
फिर चलूँ तुम्हारी रहियाँ ।
तुम बिन मेरा कोइ न गुसइयाँ।।
उजड़ा घर तुमहिं बसइयाँ।
दुख जन्म जन्म मैं सहियाँ ।।
अब करूँ सोई तुम कहियाँ ।
मेटो जग भूल भुलइयाँ ।।
कर्मन से खूँट छुड़इयाँ ।
शब्दा रस सार पिलइयाँ ।।
मैं दुख सुख बहुतक सहियाँ।

कुल लाज तजी नहिं जइयाँ ।।
इन्द्री बस आन पड़इयाँ ।
भोगन में बहुत फँसइयाँ ।।
ऐसी कोई कहन न कहियाँ ।
जैंसी तुम बात सुनइयाँ ।।
गगना में सुरत चढ़इयाँ।
मन माया दोऊ पचइयाँ ।।
सतपुरुष भेद बतलइयाँ।
चौंथा पद अगम दिखइयाँ ।।
नइया मेरी पार लगइयाँ।
फिर अलख अगम दरसइयाँ ।।
राधास्वामी चरन समइयाँ ।
छिन छिन में लेउँ बलैयाँ ।।

।। पाँचवाँ शब्द ।।

मौत डर छिन छिन व्यापे आई ।
काल भय पल पल मोहिं सताई ।।
सुरत मन बहुत चढ़ाऊँ भाई ।
गगन में टिके न छिन इक जाई ।।
कहो कस काटूं बड़ी बलाई ।
गुरू मोहिं कहें नित्त समझाई ।।
सुरत मन नेक नहीं ठहराई ।
करूँ क्या कैसे पाऊँ राही ।।
गुरू से यह फर्याद सुनाई ।
शब्द में कभी न जाय समाई ।।
भरोसा दम का है नहिं भाई ।
मर्म में अब तक कुछ नहिं पाई ।।
करूँ क्या चले न कोई उपाई ।

सरन गुरु गहूँ यही ठहराई ।।
प्रीत का घाटा बहुत दिखाई।
सरन भी मो से गही न जाई ।।
दोऊ में एक न अब बन आई ।
मरूँ क्या अब मैं माहुर खाई ।।
गुरू तब बचन सुनाया सार ।
मरे मत बौरी धीरज धार ।।
नाम रट मन से बारम्बार ।
रूप गुरु धारो हिये मँझार ।।
करो तुम नित प्रति यह करतूत ।
टलें तब तेरे घट के दूत ।।
जुगत से बस कर मन का भूत ।
लगे तब धुन से तेरा सूत ।।
तजे मत नित कर यह अभ्यास ।

गुरू का सँग कर रह कर पास।।
मिटे तब जग की तेरी आस ।
लगे तब घट में करन बिलास ।।
भोग सब त्यागो होहु निरास ।
सुरत तब पावे गगन निवास ।।
शब्द रस पीवे स्वाँसो स्वाँस ।
महल में जावे पावे बास ।।
मौज को ताको कर विश्वास ।
नहीं कुछ जतन नहीं परियास ।।
होहु अब राधास्वामी दास ।
करें वह पूरन इक दिन आस ।।

।। छठा शब्द ।।

नाम दान अब सतगुरु दीजे ।
काल सतावे स्वाँसा छीजें ।।
दुख पावत मैं निस दिन भारी ।
गही आय अब ओट तुम्हारी ।।
तुम समान कोइ और न दाता ।
मैं बालक तुम पित और माता ।।
मो को दुखी आप कस देखो।
यह अचरज मोहिं होत परेखो ।।
मैं हूँ पापी अधम विकारी ।
भूला चूका छिन छिन भारी ।।
अवगुन अपने कहँ लग बरनूँ ।
मेरी बुधि समझे नहिं मरमूँ ।।

तुम्हरी गति मति नेक न जानूँ।
अपनी मति अनुसार बखानूँ ।।
तुम समरथ और अंतरजामी ।
क्या क्या कहूँ मैं सतगुरु स्वामी ।।
मौज करो दुख अंतर हरो ।
दया दृष्टि अब मो पैं धरो।।
माँगूँ नाम, न माँगूँ मान ।
जस जानो तस देव मोहिं दान ।।
मैं अति दीन भिखारी भूखा ।
प्रेम भाव नहिं सब विधि रूखा ।।
कैसे दोगे नाम अमोला ।
मैं अपने को बहु विधि तोला ।।
होय निरास सबर कर बैठा ।

पर मन धीरज धरे न नेका ।।
शायद कभी मेहर हो जावे ।
तो कहुँ नाम नोक मिल जावे ।।
बिना मेहर कोइ जतन न सूझे ।
बख़शिश होय तभी कुछ बूझे ।।
किनका नाम करे मेरा काज ।
हे सतगुरु मेरी तुमको लाज ।।
अब तो मन कर चुका पुकार ।
राधास्वामी करो उधार।।

।। सातवाँ शब्द ।।

नाम रस पीवो गुरु की दात ।
शब्द सँग भींजो मन कर हाथ ।।
चरन गुरु पकड़ो तन मन साथ ।
मान मद मारो आवे शांत ।।
परख कर समझो गुरु की बात ।
निरख कर चलियो माया घात।।
जगत सब डूबा भौंजल जात।
नाम बिन छुटे न जम का नात ।।
घाट घट उलटो दिन और रात ।
मोह की बाजी होगी मात ।।
सुरत से करो शब्द विख्यात ।
गगन चढ़ देखो जा साक्षात ।।

मिटे फिर मन की सब उत्पात ।
राधास्वामी परखी और परखात ।।

।। आठवाँ शब्द ।।

गुरु करो मेहर की दृष्टि
दास पल पल दुख पावत ।
मैं आरत करूँ बनाय
रोग सब ही घट जावत ।।
निज औगुन देखूँ आय
मनहिं मन में पछतावत।
क्यों कर करूँ पुकार
काल अब बहु भरमावत।।
काम क्रोध अति जोर
जीव इन में झख मारत ।
राधास्वामी लेओ बचाय
रहूँ मैं अति घबरावत।।

सुनिये दीनदयाल,
तुम्हें मैं टेर सुनावत ।
तुमको समरथ जान,
कहूँ यह दर्द बुझावत।।
खोलो प्रेम दुआर,
नहीं मोहिं कर्म बहावत।
शब्द माहिं दृढ़ करो,
रहूँ छिन गुन गावत।।
रसिक रहूँ धुन माहिं,
और कछु नाहिं सुहावत।
दुख पाये मैं बहुत,
नीच मन कहा मनावत।।
कैसे करूँ पुकार,

शब्द में नहीं लगावत ।
आज बने तो बने,
बहुर यह दाव न पावत।।
मैं हूँ दीन अधीन,
ईर्षा बहुत जरावत।
मेटो कलह अपार,
काहे को नित्त बढ़ावत ।।
तुमही करो सहाय,
मोर कुछ नाहिं बसावत ।
डरत रहूँ दिन रात,
काल से जान छिपावत।।
मैं नित करूँ पुकार,
ख़्याल तुम क्यों नहिं लावत।

मर्म न जानूँ नेक,
मौंज तुम कहा करावत।।
कहँ लग कहूँ जनाय,
नेक मन बस नहिं आवत ।
सदा रही तुम साथ,
तऊ तुम क्यों न बचावत।।
अचरज भारी होत,
समझ में नेक न आवत।
गुरु बिन रक्षक नाहि,
कहें सब यही कहावत।।
कौंन कर्म मैं किये,
नित्त यह भुगतू आफत ।
हार पड़ी अब द्वार,

बहुरि मैं तुमहिं मनावत।।
जस तस दीजे दान,
और कोई चित न समावत ।
राधास्वामी नाम,
पहर आठों अब गावत ।।

।। नवाँ शब्द ।।

सतगुरु मेरी सुनो पुकार ।
मैं टेरत बारम्बार ।।
दुर्मत मेरी दूर निकारो ।
मुझे कर लो चरन अधारो ।।
मोहिं भौंजल पार उतारो।
मेरी पड़ी नाव मँझधारो।।
तुम बिन अब कोइ न सहारो ।
अपना कर मुझे सम्हारो ।।
मैं कपटी कुटिल तुम्हारो ।
तुम दाता अपर अपारो।।
मैं दीन दुखी अति भारो ।
जब चाहो तब निस्तारो ।।
मैं आरत करूँ तुम्हारी ।

तन मन धन तुम पर वारी।।
अब मिला सहारा भारी ।
मैं नीच अजान अनाड़ी ।।
घट भेद नाद समझाया ।
मन बैरी स्वाद न पाया।।
दुख सुख में बहु भरमाया ।
जग मान बड़ाई चाहा ।।
उल्टूँ मैं इसको क्यों कर ।
बिन दया तुम्हारी सतगुरु ।।
अब खैंचो राधास्वामी मन को ।
मैं विनय सुनाऊँ तुमको ।।

।। दसवाँ शब्द ।।

तुम धुर से चल कर आये ।
अब क्यों ऐसी ढील लगाये ।।
जल्दी से काज सम्हारो ।
तुम दाता देर न धारो ।।
मैं आतुर तुम्हें पुकारूँ ।
चित में कोई और न धारूँ ।।
मेरा जीवन मूर अधारा ।
जस सीपी स्वाँत निहारा ।।
अब मुक्ता नाम जमाओ ।
मेरे जी की आस पुराओ ।।
मन सूरत अधर चढ़ाओ ।
अब के मेरी खेप निबाहो ।।
भौसागर वार न पारा ।

डूबे सब उसकी धारा ।।
है मिथ्या झूठ पसारा ।
धोखे को सच सा धारा ।।
सतगुरु बिन धोख न जाई ।
बिन शब्द सुरत भरमाई ।।
या ते तुम सरना ताकूँ ।
सोवत मैं क्यों कर जागूँ ।।
बिन मेहर जतन सब थाके ।
मैं कर कर बहु विधि त्यागे ।।
बल पौरूष मोर न चाले ।
मैं पड़ी काल जंजाले ।।
बिनती अब करूँ बनाई ।
तुम सतगुरु करो सहाई ।।
मैं दी अधीन तुम्हारी ।

तुम बिन अब कौन सम्हारी ।।
कुछ करो दिलासा मेरी ।
भरमों की पड़ी अँधेरी ।।
परकाश करो घट भाना ।
मिट भर्म तिमिर अज्ञाना ।।
तुम तज अब किस पैं जाऊँ ।
मैं कह कह तुम्हें सुनाऊँ ।।
जब चाहो जब ही देना ।
तुम बिन मोहिं किससे लेना ।।
मैं द्वारे पड़ी तुम्हारे ।
धीरज धर रहूँ सम्हारे ।।
मन आतुर दुख न सहारे ।
उठ बारंबार पुकारे ।।
मैं सरन दयाल तुम्हारी ।

कर जल्दी लो निस्तारी ।।
घर तुम्हारे कमी न कोई ।
कहिं भाग ओछ मेरा होई ।।
यह भी सब तुम्हरे हाथा ।
तुम चाहो करो सनाथा ।
अब कहँ लग करूँ पुकारी ।।
मैं हार हार अब हारी ।
तुम दाता दीन दयाला ।
राधास्वामी करो निहाला ।।
मैं आरत कीन्ह अधारी ।
तुम राधास्वामी सब पर भारी ।।

।। ग्यारहवाँ शब्द ।।

माँगूँ इक गुरु से दाना ।
घट शब्द देव पहिचाना ।।
मन साथ सदा भरमाना ।
कर किरपा कर्म छुड़ाना ।।
सुर्त चढ़े सुने धुन ताना ।
मन मारो कर्म नसाना ।।
सब छूटे बान कुबाना ।
सत शब्द मिले दृढ़ थाना ।।
अब कर दो नाम दिवाना ।
मैं ताकूँ शब्द निशाना ।।
कोइ करे न मेरी हाना ।
मोहिं तुम पर बल बल जाना ।।

कल धारा मुझे न बहाना ।
मोहिं देना शब्द ठिकाना ।।
मन हो गया बहुत निमाना ।
अब राधास्वामी चरन समाना ।।

।। बारहवाँ शब्द ।।

मैं लिखूँ गुरु को पाती ।
मन कीन्ही बहु उतपाती ।।
मेरी धड़के छिन छिन छाती ।
नहिं धीरज बहु दुख पाती ।।
विरह अगिन मोहिं नित्त जलाती ।
मैं पल पल गुरु गुन गाती ।।
मेरे दर्द उठा बहु भाँती ।
मैं किस को वर्ण सुनाती ।।
अब छोड़ी कुल और जाती ।
गुरु चरन सुरत मेरी राती ।।
मैं रहूँ लगन बिच माती ।
अब सुरत गगन को जाती ।।
व्हाँ शब्द अमी रस खाती ।

गुरु प्रेम हिये में लाती ।।
दर्शन बिन होय न शान्ती ।
उलटी फिर तन में आती ।।
कोइ सुने न मेरी बाती ।
मैं रहूँ सदा घबराती ।।
मैं रोती दिन और राती ।
मन मारे बहु विधि लाती ।।
गुरु करो दया की दाती ।
तो टले काल की घाती ।।
मन आवे मेरे हाथी ।
तो मारे सिंह को हाथी ।।
मेरे लगी प्रेम की काती ।
हिरदे में धीर न लाती ।।
अब हर दम उमँग जगाती ।

मैं देखूँ गुरु कराँती ।।
मारूँ अब माया ताती ।
गुरु मूरत चित में ध्याती ।।
अब छूटी सकल भराँती ।
मैं पाई नाम दराँती ।।
अब काटूँ कर्म सनाती ।
गुरु बिन क्यों और मनाती ।।
गुरु को सब भेद जनाती ।
मैं पाये दुख बहु भाँती ।।
कस मानसरोवर न्हाती ।
मैं उल्टी धार बहाती ।।
जुग बँधे जो गुरु के साथी ।
तो मर्म सभी दरसाती ।।
गुरु चरन सदा परसाती ।

मैं सुरत पतंग उड़ाती ।।
मन चादर नाम रँगाती ।
घट भीतर नाद बजाती ।।
जन्म मरन दुख दूर कराती ।
ममता मैं सकल खपाती ।।
राधास्वामी सरन पराती ।
राधास्वामी दास कहाती ।।

।। तेरहवाँ शब्द ।।

गुरु मोहि दीजे अपना धाम ।।
मैं तो निकाम भर्म बस रहता ।
तुम दयाल लो मोको थाम ।।
ना जानूँ क्या पाप कमाये ।
गहे न सूरत नाम ।।
कैसी करूँ जोर नहिं चाले ।
मन नहिं पावे दृढ़ विश्राम ।।
हे दयाल अब दया विचारो ।
मैं दुख में रहूँ आठों जाम ।।
ना सुर्त चढ़े न मन ठहरावे ।
शब्द महातम नहिं पतियाम ।।
संत मता ऊँचा सुन पकड़ा ।

क्यों नहिं संत करें मेरी साम ।।
संत मते को लज्जा आवे ।
जो मेरा नहिं पूरन काम ।।
अपनी मति ले करूँ पुकारा ।
मौज तुम्हारी मैं नहिं जाम ।
बार बार मैं विनय पुकारूँ ।
जस जानो तस देव निज नाम ।।
राधास्वामी कहें निज नामी ।
दर्दी को चहिये आराम ।।

।। चौदहवाँ शब्द ।।

सुरत मेरी धोय डालो ।
नहिं मरिहों रोय ।।
कर्म मेरे खोय डालो ।
मैं सरना तोय ।।
भर्म मेरे सब टारो ।
मैं दासी तोय ।।
मर्म अब दे डारो ।
तुम सतगुरु मोय ।।
काल को धर मारो ।
तुम सूरा होय ।।
परन को धर धारो ।
नहिं हरकत होय ।।

सरम यह कर डालो ।
जो बखशिश होय ।।
मोह को ले डारो ।
तुम समरथ सोय ।।
जाल से अब काढ़ो ।
लगी फाँसी मोय ।।
अस लखा न कोय ।।

।। पंद्रहवाँ शब्द ।।

गुरु मोहिं अपना रूप दिखाओ ।।
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण ।
जीव उबार कराओ ।।
रूप तुम्हारा अगम अपारा ।
सोई अब दरसाओ ।।
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ ।
अभय दान दिलवाओ ।।
यह भी रूप पियारा मो को ।
इस ही से उसको समझाओ ।।
बिन इस रूप काज नहिं होई ।
क्यों कर वाहि लखाओ ।।
ता ते महिमा भारी इसकी ।
पर वह भी लखवाओ ।।

वह तो रूप सदा तुम धारो ।
या ते जीव जगाओ ।।
यह भी भेद सुना मैं तुम से ।
सुरत शब्द मारग नित गाओ ।।
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा ।
वा में भी अब सुरत पठाओ ।।
डरता रहूँ मौत और दुख से ।
निर्भय कर अब मोहिं छुड़ाओ ।।
दीनदयाल जीव हितकारी ।
राधास्वामी काज बनाओ ।।

।। सोलहवाँ शब्द ।।

देख पियारे मैं समझाऊँ ।
रूप हमारा न्यारा ।।
वह तो रूप लखे नहिं कोई ।
जब लग देउँ न सहारा ।।
करनी करो मार मन डालो ।
इन्द्री रोक दुआरा ।।
सुरत चढ़ाय गगन पर धाओ ।
सुन्न शिखर के पारा ।।
सत्त पुरुष का रूप दिखाऊँ ।
अलख अगम दर सारा ।।
ता के आगे राधास्वामी ।
वह निज रूप हमारा ।।
धीरज धरो करो सतसंगत ।

मेहर दया से लेउँ सुधारा ।।
वह तो रूप दिखा कर छोड़ूँ ।
तुम जल्दी क्यों करो पुकारा ।।
तुम्हरी चिंता मैं मन धारी ।
तुम अचिंत रह धरो पियारा ।।
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती ।
और परतीत सँवारा ।।
यह करनी मैं आप कराऊँ ।
और पहुँचाऊँ धुर दरबारा ।।
राधास्वामी कहत सुनाई ।
जब जब जैसी मौज विचारा ।।

।। सत्रहवाँ शब्द ।।

सुरत की आज लगा दे तारी ।
गगन चढ़ पीऊँ अमृत धारी ।।
शब्द धुन उठती जहाँ करारी ।
नाम सुन तन मन लिया पखारी ।।
गुरु का रूप निहार निहारी ।
मैं किंकर अधम अनाड़ी ।।
तुम सतगुरु पतित उधारी ।
तुम्हरी गती तुमहिं विचारी ।।
मैं छिन छिन पल पल विषय अहारी ।
तुम किरपा अमृत धार बहा री ।।
अब लीजे मोहिं निस्तारी ।
घट दीजे नाम सम्हारी ।।
मैं भूला भूल फँसारी ।

तुम काढ़ो मोहिं निकारी ।।
मैं दास दासन पनिहारी ।
मैं तुम चरन जाउँ बलिहारी ।।
अब मारग देव उघाड़ी ।
मेरा मन करो शांत सुखारी ।।
मेरा कोई नहीं अपना री ।
मेरे तुम हो मैं भी तुम्हारी ।।
क्या क्या कहूँ वर्ण सुना री ।
मन जैसे नाच नचा री ।।
इन्द्री मोहिं नित्त सता री ।
भोगन की चाह बढ़ा री ।।
रोगन मे सदा गिरसा री ।
भव कूप पड़ा गहरा री ।।
कस निकसूँ कौन उबारी ।

सुर्त हुई न शब्द पियारी ।।
बिन शब्द बहुत भरमा री ।
जल पत्थर जगत पुजारी ।।
इन भर्मन रहा भरमा री ।
तुम मिल अब कीन सुधारी ।।
राधास्वामी चरन दुलारी ।
अब नाम देव कर न्यारी ।।

।। अट्ठारहवाँ शब्द ।।

घट का पट खोल दिखाओ ।।
यह मन जूझ जूझ कर हारा ।
लगे न एक उपाओ ।।
तुम समरत्थ कहा नहिं तुम्हरे ।
क्यों एती देर लगाओ ।।
मैं दुख सुख में खाउँ झकोले ।
क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ ।।
अब ही दया करो मेरे दाता ।
मन और सूरत गगन चढ़ाओ ।।
मन तो दुष्ट विरह नहिं लावे ।
प्रेम प्रीत का दान दिलाओ ।।
यह तो सुख झूठे ही चाहे ।

सच्चे की परतीत न लाओ ।।
भोग बिलास जगत के माँगे ।
सुरत शब्द का रस नहिं पाओ ।।
क्यों कर कहुँ किस विधि समझाऊँ ।
गुरु का बचन न हृदे समाओ ।।
इस मन की कुछ गढ़त अनोखी ।
शब्द माहिं कुछ प्रेम न भावो ।।
कैसे बचे पचे चौरासी ।
यह नहिं चढ़ता गुरु की नावो ।।
संसारी के धक्के खावे ।
फिर जमपुर में पिटता जाओ ।।
ऐसे दुक्ख सहेगा बहुतक ।
अब नहिं माने गया भुलाओ ।।

सब घट में गुरु तुम की प्रेरक ।
मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ ।।
तुम बिन और न कोई मेरा ।
चार लोक में तुमहिं दिखाओ ।।
अब तो दया करो राधास्वामी ।
जैसे बने तैसे घाट चढ़ाओ ।।

।। उन्नीसवाँ शब्द ।।

सतगुरु से करूँ पुकारी ।
संतन मत कीजे जारी ।।
जीवन का होय उधारी ।
मैं देखूँ यही बहारी ।।
मैं मौज करूँ फिर भारी ।
सब आरत करें तुम्हारी ।।
मैं हरखूँ खेल निहारी ।
मानो यह अर्ज़ हमारी ।।
मैं राखूँ पक्ष तुम्हारी ।
अब कीजे दया विचारी ।।
मैं बालक सरन अधारी ।
मैं करूँ बीनती भारी ।।

जो मौज न हो यह न्यारी ।
तो फेरो सुरत हमारी ।।
घट भीतर होय क़रारी ।
शब्दारस करे अहारी ।।
दोउ में से एक सुधारी ।
जो दोनों करो दया री ।।
मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी ।
मैं राधास्वामी गोद पड़ा री ।।

।। बीसवाँ शब्द ।।

लगाओ मेरी नइया सतगुरु पार ।
मैं बही जात जग धार ।।
तुम बिन नाहीं को कढ़ियार ।
लगा दो डूबी खेप किनार ।।
सहेली मत तू मन में हार ।
दिखाऊँ जग का वार और पार ।।
चढ़ाऊँ सूरत उल्टी धार ।
शब्द सँग खेय उतारूँ पार ।।
गुरु को धर ले हिये मँझार ।
नाम धुन घट में सुन झनकार ।।
तरंगें उठतीं बारम्बार ।

भँवर जहँ पड़ते बहुत अपार ।।
मेहर से पहुँची दसवें द्वार ।
राधास्वामी दीन्हा पार उतार ।।

।। इक्कीसवाँ शब्द ।।

दर्शन की प्यास घनेरी ।
चित तपन समाई ।।
जग भोग रोग सम दीखें ।
सतसंग में सुरत लगाई ।।
गति अगम तुम्हारी समझी ।
पर दरस बिना तिरपत नहिं आई ।।
गुरुमुखता बन नहिं पड़ती ।
फिर कैसे परत्यक्ष पाई ।।
तुम गुप्त रहो जीवन से ।
संग सब के दूर न भाई ।।
बिन किरपा सतगुरु पूरे ।
निज रूप न तुम दिखलाई ।।

अब तरसूँ तड़पूँ बहु विधि ।
तुम निकट न होत रसाई ।।
हो समरथ दाता सब के ।
मुझ को भी खैंच बुलाई ।।
मैं कैसे देखूँ तुम को ।
कोई जतन न अब बन आई ।।
घट का पट खोलो प्यारे ।
यह बात न कुछ कठिनाई ।।
तुम चाहो तो छिन में कर दो ।
नहिं जन्म जन्म भटकाई ।।
अब दरस दिखादो जल्दी ।
मैं रहूँ नित्त मुरझाई ।।
अब दया विचारो ऐसी ।

मैं रहूँ चरन लौं लाई ।।
तुम बिन कोई और न जानूँ ।
तुमहीं से रहुँ लिपटाई ।।
यह आरत अद्भुत गाई ।
सूरत मेरी शब्द समाई ।।
राधास्वामी कहत सुनाई ।
मैं दासन दास कहाई ।।

।। बाईसवाँ शब्द ।।

सोचत रही री बेचैन,
रैन दिन बहु पछतानी ।
मेरी लगी न प्रीत सँग शब्द,
कहन मेरी सभी कहानी ।।
झुरत रहूँ मन
माहिं, कौन से करूँ बखानी ।
सुननहार नहिं सुने, कहो
मेरी कहा बसानी ।।
मौज बिना क्या होय,
मौज की सार न जानी ।
सबरन आवे चित्त, दर्द में रैन बिहानी ।।
दिवस करूँ फ़र्याद,
गुरु मेरे अन्तरजामी ।

अपनी चूक विचार, रहूँ
मैं अति घबरानी ।।
दीनानाथ दयाल, सुनो
जल्दी मेरी बानी ।
चरन पकड़ हठ करूँ,
मेहर कर देओ दानी ।।
मैं तो अजान अभाग,
कुटिल मोहिं सब जग जानी ।
जो अपना कर लिया,
लाज अब तुम्हें समानी ।।
राधास्वामी कह रहे,
यह अचरज बानी ।
सौदा पूरा मिले, होय नहिं तेरी हानी ।।

।। तेईसवाँ शब्द ।।

धीरज धरो बचन गुरु गहो ।
अमृत पियो गगन चढ़ रहो ।।
दूर न जाने सतगुरु पास ।
निस दिन करो चरन विश्वास ।।
सागर मेहर दया की मौंज ।
राधास्वामी दीन्ही अचरज चौंज ।।
खेल खिलावें बाल समान ।
देखे मात हरख मन आन ।।
रक्षक शब्द जान और प्रान ।
सो पहलू छोड़े न निदान ।।
मन की गढ़त करावें दम दम ।
वह हैं मित्र वही हैं हमदम ।।
भूल चूक बख़शे वह छिन छिन ।

संग रहें इसके वह निस दिन ।।
यह मन कच्चा बूझ न जाने ।
उनकी गति कैसे पहिचाने ।।
जगत जाल में रहा भुलाई ।
सुरत शब्द में नहीं जमाई ।।
या से सोग वियोग सतावे ।
मन का घाट हाथ नहिं आवे ।।
गुरु कुंजी जो बिसरे नाहीं ।
घट ताला छिन में खुल जाई ।।
खुले घाट तब सुन में देखे ।
धुन की ख़बर रूप निज पेखे ।।
चढ़े अधर जब नाम समावे ।
रस पावे सूरत घर आवे ।।
रतन खान घट में जब खुले ।

दुक्ख दर्द और दुर्मत टले ।।
मौज निहारो सबर सम्हारो ।
भर्म अँधेरा कौतुक टारो ।।
अमल अचल पकड़ो गुरु चरना ।
सुक्ख पिरापत दुख सब हरना ।।
यह संसार अगिन भंडार ।
सीतल जल सतगुरु आधार ।
बड़े भाग जिन सतगुरु पाये ।
चौरासी से तुरत हटाये ।।
दुक्ख सुक्ख जो व्यापत होई ।
पिछले कर्म भोग हैं सोई ।।
कोइ दिन सोग रोग हट जावें ।
देर नहीं जल्दी भुगतावें ।।

।। दोहा ।।

राधास्वामी रक्षक जीव के,
जीव न जाने भेद ।
गुरु चरित्र जाने नहीं,
रहे कर्म के खेद ।।
खेद मिटे गुरु दरस से,
और न कोई उपाय ।
सो दर्शन जल्दी मिलें,
बहुत कहा मैं गाय ।।

।। दोकड़िया छन्द ।।

धीरज धरना, मत घबराना, चित ठहराना, रूप समाना, नीत गुन गाना, नहीं बहाना, यही निशाना,

ज्यों पपिहा स्वाँती आस ।।
घट में रहना, कहीं न बहना, मन में सहना, रस ही लेना, धीरज गहना, मर्म न कहना, ज्यों जल मीना, राधास्वामी पास ।।
आगे दया मेहर सतगुरु की ।
वहीं दरसावें वह अब धुर की ।।
राधास्वामी बचन सुनाया ।
जीवन की हठ से लिखवाया ।।

।। दोहा ।।

सुरत बसाओ शब्द में,
शब्द गगन के माहिं ।
विरह बसाओ हिये में,

हिया तिरकुटी माहिं ।।
सुरत शब्द इक अंग कर,
देखो बिमल बहार ।
मध्य सुखमना तिल बसे,
तिल में जोत अकार ।।
शब्द स्वरूपी संग हैं,
अभी न होते दूर ।
धीरज रखियो चित्त में,
दीखेगा सत नूर ।।
सत्तनाम सतपुरुष का,
सत्तलोक में पूर ।
सुरत चढ़ाओ शब्द में,
दर्शन हाल हुजूर ।।

प्रेम प्रीत राचे रहो,
कुमति कुटिल से दूर ।
मन सूरत से जूझ कर,
रहो शब्द में सूर ।।

हमारे प्रकाशन

- परमार्थी वचन
- भविष्यवाणियों की एक झलक 1971
- भविष्यवाणियों की एक झलक1972
- जयगुरुदेव आवाज़ पत्रिका
- फ़रियाद और पुकार

प्रकाशक

जयगुरुदेव आध्यात्मिक साहित्य सस्थान
जयगुरुदेव आश्रम, सतगुरु धाम,
नैमिषारण्य नया बस अड्डा के समीप, नैमिषारण्य
जिला - सीतापुर (उ0 प्र0)